NJESR/January 2021/ Volume-3/Issue-1 E-ISSN- 2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2021.3.1.32-39

'महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में कथ्य एवं शिल्प'

सोनिया
शोधार्थी
एम.फिल
हिंदी
एमडीयू यूनिवर्सिटी रोहतक
ईमेल- soniakadian310@gmail.com

(Received:20December2020/Revised:31December2020/Accepted:10January2021/Published:20January2021)

महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय

महान कवयित्री महादेवी वर्मा छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक थीं। आधुनिक हिंदी साहित्य में उनका महान योगदान रहा है। उन्होंने कई कहानियां, उपन्यास, निबंध और संस्मरण लिखे, परंतु उन्हें अत्यधिक ख्याति कविताओं से ही प्राप्त हुई, वे हिंदी साहित्य में छायावाद युग के चार प्रमुख का कवि सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कवियों में से एक मानी जाती हैं। महादेवी वर्मा ने स्वतंत्रता से पहले और बाद का वर्णन अपनी कविताओं में किया है। कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ, वे एक कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक की थी।

आधुनिक गीत काव्य में महादेवी वर्मा का स्थान सर्वोपरि है। यह एक महान कवयित्री होने के साथ-साथ हिंदी साहित्य जगत में एक बेहतरीन गद्य लेखिका के रूप में भी जानी जाती है। महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी ने उन्हें माता सरस्वती कहकर भी संबोधित किया है, अर्थात उन्हें सरस्वती की उपाधि प्रदान की है। बचपन से ही लेखिका को साहित्य जगत से प्रेम था। उन्हें इसकी प्रेरणा अपने माता-पिता से ही मिली। इनके पिता श्री गोविंद सहाय वर्मा जी ने भी अपनी शुरुआत साहित्य जगत से ही की थी। महादेवी की माता श्रीमती हेमरानी देवी एक विदुषी महिला थी, उन्हें संस्कृत और हिंदी का अच्छा ज्ञान होने के साथ-साथ, वे एक समाज सुधारक और एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। उन्होंने ही महादेवी को तुलसीदास, सूरदास और मीरा का साहित्य पढ़ाया। परिवारिक माहौल के कारण महादेवी जी को बचपन से ही साहित्य में अभिरुचि थी। फलतः मात्र 7 वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने मौलिक काव्य की रचना कर दी थी। अतः छायावादी काव्य के पल्लवन एवं विकास में इनका अविस्मरणीय योगदान रहा है।

महादेवी वर्मा जीवन परिचय

महादेवी वर्मा (1907-1987) को हिन्दी साहित्य की सबसे प्रतिभावान कवयित्रियों में से एक माना जाता है। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग' के चार प्रमुख स्तंभों, में एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी पुकारा जाता है। कवि निराला ने उन्हें हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती भी कहा है।

महादेवी वर्मा ने स्वतंत्रता से पूर्व भारत तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का भी भारत देखा था। वे उन कवयित्रियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा समाज-सुधार तथा महिलाओं को जागरूक करने का प्रयास भी किया।

उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और श्रृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया। महादेवी वर्मा ने ब्रजभाषा के समान ही खड़ी बोली हिन्दी की कविता में भी कोमलता लाने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया।

संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अपना ज्यादातर समय अध्यापन में व्यतीत किया तथा अपने जीवन के अंतिम समय तक प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य के रूप में कार्य करती रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ परंतु उन्होंने अविवाहिता की भांति जीवन-यापन किया।प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। वे हिन्दी साहित्य के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भांति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। वर्ष 2007 उनकी जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया।

महादेवी वर्मा का जन्म 26 जनवरी, 1907 को फर्रुखाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः बाबा बाबू बाँके बिहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी महादेवी मानते हुए पुत्री का, नाम महादेवी रखा। उनके पिता का नाम गोविंद प्रसाद वर्मा था, जो भागलपुर के एक कॉलेज में पढ़ाने का कार्य किया करते थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था।

हेमरानी देवी बड़ी धर्मपरायण, कर्मनिष्ठ, भावुक एवं शाकाहारी महिला थीं। विवाह के समय अपने साथ सिंहासनासीन भगवान की मूर्ति भी लायी थीं। वे प्रतिदिन कई घंटे पूजा-पाठ तथा रामायण, गीता तथा विनय पत्रिका का पाठ किया करती थीं एवं संगीत से उन्हें काफी लगाव था। इसके बिल्कुल विपरीत उनके पिता गोविन्द प्रसाद वर्मा सुन्दर, विद्वान, संगीत प्रेमी, नास्तिक, शिकार करने एवं घूमने के शौकीन, मांसाहारी तथा हँसमुख व्यक्ति थे। सुमित्रानंदन पन्त तथा निराला को भाई समान स्नेह करती थीं तथा उन्हें राखी भी बाँधती थी। निराला जी से उनकी अत्यधिक निकटता थी, उनकी पुष्ट कलाइयों में महादेवी जी लगभग चालीस वर्षों तक राखी बाँधती रहीं।

शिक्षा-दीक्षा

महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा 5 वर्ष की अवस्था में उनके गांव से सन् 1912 में मिशन स्कूल इंदौर से प्रारंभ हुई। इसके साथ उन्होंने संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा का अध्ययन भी अपने घर पर रहते हुए ही किया। इसके अलावा उन्हेंने चित्रकला और संगीतकला में भी निपुणता हासिल कर ली थी। उनके विवाह के कारण उनकी शिक्षा कुछ समय के लिए स्थगित कर दी गई थी। परंतु उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से 1919 ई. में प्रयागराज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। यही से उनकी लेखनी में सुधार आने लगा, 1921 ई. में महादेवी वर्मा जी ने आठवीं कक्षा प्रथम स्थान पर रहते हुए उत्तीर्ण की। और 1924 में भी इन्होंने प्रथम स्थान पर रहते हुए मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की।

मैट्रिक के बाद वह एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो गई थी। उन्होंने अपनी एम.ए की परीक्षा 1932 में उत्तीर्ण की। तब तक इन की दो कविताएं प्रकाशित हो चुकी थीं। अब वह एक प्रसिद्ध कवित्री के रूप में उभर चुकी थी, और उनकी कविताएं प्रकाशित होने लगी थी। विद्यालय में रहते हुए हिंदी के अध्यापक से प्रभावित होकर उन्होंने ब्रज भाषा में भी कुछ कविताएं लिखी, फिर खड़ीबोली की कविताओं से प्रभावित होकर रोला और हरिगीतिका शब्दों में काव्या लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में प्राय: राष्ट्र और समाज को प्रभावित करने वाली कविताओं का उत्थान किया।

महादेवी वर्मा की स्कूली शिक्षा इंदौर मिशन में स्कूल में आरंभ हुई थी। उन्हें, अंग्रेजी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह जैसी बाधा पड़ जाने के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रवास में रहने लगीं।

महादेवी वर्मा 1921 के दौरान आठवीं कक्षा में पूरे प्रान्त में प्रथम आई थी। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की।

वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। कॉलेज के दिनों में सुभद्रा कुमारी चौहान उनकी अच्छी सहेली बन चुकी थीं। 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह 'नीहार' तथा 'रश्मि' प्रकाशित हो चुके थे।

वैवाहिक जीवन

इनका विवाह सन् 1916 में श्री स्वरूप नारायण वर्मा से हुआ, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। श्री वर्मा इण्टर करके लखनऊ, मेडिकल कॉलेज में बोडिंग हाउस में रहने लगे। महादेवी जी उस समय क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद के छात्रवास में थीं। महादेवी वर्मा को वैवाहिक जीवन व्यतीत करना पसंद नहीं था। कारण कुछ भी रहा हो पर श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं था। सामान्य स्त्री-पुरुष के में उनके संबंध मधुर ही रहे।

दोनों में कभी-कभी पत्राचार भी होता था। यदा-कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में उनसे मिलने भी आते थे। श्री वर्मा ने महादेवी जी के कहने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया। महादेवी जी सन्यासिनी रूपी जीवन व्यतीत करती थीं तथा आजीवन श्वेत वस्त्र धारण करती रहीं, तख्त पर सोईं और कभी शीशा नहीं देखा। 1966 में पति की मृत्यु के बाद वे स्थाई रूप से इलाहाबाद में रहने लगीं।

महिला कवि सम्मेलन की शुरुआत

भारत में महिला कवि सम्मेलन की शुरुआत सर्वप्रथम उन्हीं के द्वारा की गई थी। इस प्रकार का पहला अखिल भारतवर्षीय कवि सम्मेलन 15 अप्रैल 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला, विद्यापीठ में संपन्न हुआ। वे हिंदी साहित्य में रहस्याद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी बौद्ध धर्म से बहुत प्रभावित थीं । महात्मा गाँधी से प्रेरणा लेकर वे जनसेवा के कार्यों में लग गईं, जिसके अंतर्गत उन्होंने झूसी तथा आजादी के दौरान महत्त्वपूर्ण योगदान किया। 1936 में नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कसबे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने एक बँगला बनवाया था। जिसका नाम उन्होंने मीरा मंदिर रखा था। जितने दिन वे यहाँ रहीं इस छोटे से गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं।

महिला शिक्षा प्रमुख उद्देश्य

महिलाओं को शिक्षित तथा आत्मनिर्भर बनाना मुख्य उद्देश्य था । आजकल इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। श्रृंखला की कड़ियाँ में स्त्रियों की मुक्ति और विकास के लिए उन्होंने जिस साहस व दृढ़ता से आवाज उठाई हैं और जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निंदा की है उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया।
शिक्षा के क्षेत्र में तथा स्त्रियों के सर्वांगीण विकास हेतु जो कार्य किये जिन्हें देखते हुए उन्हें समाज सुधारक कहना गलत नहीं होगा। उनके संपूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है। अपने जीवन का ज्यादातर समय उन्होंने इलाहाबाद नगर में व्यतीत किया।

लेखनकार्य

महादेवी वर्मा का कार्यक्षेत्र लेखन, संपादन और अध्ययन रहा है। उन्होंने 7 वर्ष की अल्पायु में ही लिखना आरंभ कर दिया था। उन्हें लेखनकार्य की प्रेरणा अपने माता-पिता से ही प्राप्त हुई। परिवारिक माहौल के कारण महादेवी बचपन से ही लेखन कार्य में अभिरुचि लेने लगी थीं। 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए करने के पश्चात उन्होंने महिला विश्वविद्यालय के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, और वहीं पर प्रधानाचार्य के पद पर नियुक्त हुई। उसी समय इन्होंने मासिक पत्रिका **"चांद"** का कार्यभार संभाला। 1930 'निहार', 1934 'निरजा', तथा 1936 में 'संध्यागीत' नमक चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए।
कवित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ एक कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थी। इन्हें हिंदी साहित्य के सभी उसका प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।इन्होंने कई कहानियां लिखीं लेकिन उन्होंने कुछ संस्मरण रेखाचित्र और निबंध भी लिखे हैं जो अपने समय के अत्याधिक प्रभावित लेख में से एक हैं, महादेवी जी ने महिला समाज सुधारक के रूप में भी कार्य किया। इन्होंने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना 1955 में की थी, और भारत में पहला महिला कवि सम्मेलन की नींव भी उन्होंने 15 अप्रैल 1933 को **'सुभद्रा कुमारी चौहान'** की अध्यक्षता में **'प्रयाग महिला विश्वविद्यालय'** में रखी। महादेवी जी ने नए आयाम गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में स्थापित किए, इसके अलावा उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं, जिनमें प्रमुख हैं- 'मेरा परिवार', 'स्मृति की रेखाएं', 'पथ के साथी' और 'अतीत के चलचित्र' आदि। अतः इन्हें हिंदी साहित्य के सभी पुरस्कार और सम्मान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।

प्रमुख रचनाएँ-

महादेवी वर्मा ने कविता, रेखाचित्र, आलोचना आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में रचना की हैं। उन्होंने 'चाँद' और 'आधुनिक कवि काव्यमाला' का संपादन कार्य भी किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ है-

काव्य-संग्रह

- नीहार(1930)
- रश्मि(1932)
- नीरजा(1934)
- सांध्यगीत(1936)
- यामा(1936)
- दीपशिखा(1942)
- प्रथम आयाम(1980
- अग्निरेखा1988

निबंध-संग्रह

- श्रृंखला की कड़ियाँ(1942)
- क्षणदा(1956)
- संकल्पिता(1969)
- भारतीय संस्कृति के स्वर
- आपदा

संस्मरण/रेखाचित्र-संग्रह

- अतीत के चलचित्र(1941)
- स्मृति की रेखाएँ(1943)
- पथ के साथी(1956)
- मेरा परिवार(1972)

साहित्यिक विशेषताएँ-

महादेवी वर्मा कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हैं, लेकिन गद्य के विकास में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, निबंध आदि गद्य विधाओं पर सफलतापूर्वक लेखनी चलाई। उनके अधिकांश संस्मरण एवं रेखाचित्र कहानी कला के समीप दिखाई पड़ते हैं।

उनके संस्मरणों के पात्र अत्यंत सजीव एवं यथार्थ के धरातल पर विचरण करते हुए देखे जा सकते हैं।

उनकी गद्य रचनाओं में अनुभूति की प्रबलता के कारण पद्य जैसा आनंद आता है। उनके संस्मरणों के मानवेत्तर पात्र भी बड़े सहज एवं सजीव बन पड़े हैं। उनके गद्य साहित्य की मूल संवेदना करुणा और प्रेम है। इसीलिए उनका गद्य साहित्य काव्य भिन्न है। काव्य में वे प्रायः अपने ही सुख-दुख, विरह-वियोग आदि की बातें करती रही हैं, किंतु उन्होंने गद्य साहित्य में समाज के सुख-दुख का अत्यंत मनोयोग से चित्रण किया है। उनके द्वारा लिखे गए रेखाचित्रों में समाज के लि वर्ग या निम्न वर्ग के लोगों के बड़े मार्मिक चित्र मिलते हैं। इनमें उन्होंने उच्च समाज द्वारा उपेक्षित, निम्न कहे जाने वाले उन लोगों का चित्रण किया है, जिनमें उच्च वर्ग के लोगों की अपेक्षा अधिक मानवीय गुण और शक्ति है।

अतः स्पष्ट है कि उनका गद्य साहि समाजपरक है। महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय आधुनिक हिंदी साहित्य में एक महेतवपूर्ण योगदान के रूप में देखा जाता है। उनके गद्य साहित्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं और परिस्थितियों का भी यथार्थ चित्रण हुआ है। नारी समस्याओं को भी उन्होंने अपनी कई रचनाओं के माध्यम से उठाया है। वे काव्य की भाँति गद्य की भी महान साधिका रही हैं। उनके गद्य साहित्य में उनका कवयित्री-रूप भी लक्षित होता है।

सम्मान एवं पुरस्कार

- 1934 में सेक्सरिया पुरस्कार
- 1941 में द्विवेदी पदक
- 1943 हिंदी साहित्य सम्मेलन में मंगलाप्रसाद पुरस्कार
- 1943 में भारत-भारती पुरस्कार
- 1956 में पद्म भूषण साहित्य सेवा के लिए
- 1979 साहित्य अकादमी पुरस्कार
- 1982 ज्ञानपीठ पुरस्कार यमा व दीपशिखा के लिए
- 1988 में पद्म विभूषण पुरस्कार
- विक्रम कुमाऊ दिल्ली व बनारस विश्वविद्यालयों द्वारा डी लिट की मानद उपाधि।

संदर्भ ग्रंथ -

1. महादेवी वर्मा : काव्य कला और जीवन दर्शन, गुरटूर सिचारनी, आत्माराम एण्ड संस प्रकाशन (दिल्ली) संस्करण 2010,पृ. सं.-129
2. महादेवी का सृनात्मक गद्य, रतन कुमार, स्वराज प्रकाशन (नई दिल्ली) प्रथम संस्करण 2013, पृ.सं.-8
3. महादेवी का संस्मरणात्मक गद्य, चरनसखी शर्मा एम. ए, शोध प्रबंध प्रकाशन (दिल्ली), प्रथम संस्करण
4. हिंदी साहित्य और संवेदनाओं का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन (इलाहाबाद), प्रथम संस्करण
5. महादेवी का संस्मरणात्मक गद्य, चरनसखी शर्मा एम. ए. शोध प्रबंध प्रकाशन (दिल्ली), प्रथम संस्करण 1971,पृ.सं.-79
6. पथ के साथी, महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन (नई दिल्ली), प्रथम संस्करण 1995 पृ.सं.-38
7. वही पृ.सं.-48
8. महादेवी का संस्मरणात्मक गद्य, चरनसखी शर्मा एम. ए. , शोध प्रबंध प्रकाशन (दिल्ली), प्रथम संस्करण 1971,पृ. सं.-72
9. पथ के साथी, महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन (नई दिल्ली), प्रथम संस्करण1995,पृ. सं.-55
10. वही पृ. सं.-49
11. वही पृ. सं.-40
12. वही पृ. सं.-62